अध्याय

1 प्रस्तावना

1.1 कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व

सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों का कानूनी उत्तरदायित्व है कि वे शेयरधारकों के लाभ को अधिक से अधिक बढ़ाएं; परन्तु सामाजिक उमीदों तथा दबाव के कारण कारपोरेट विचारधारा में बदलाव के कारण व्यापार के लीडरों को आर्थिक प्रभाव, सामाजिक प्रभाव तथा पर्यावरणीय प्रभाव–जिन्हें संयुक्त रूप से ट्रिप्पल बॉटम लाईन कहा जाता है– के रूप में मापे जाने वाले कारपोरेट निष्पादन के संबंध में दुबारा सोचना पड़ रहा है।

कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) को एक संकल्पना के रूप में देखा जाता है जिसमें कम्पनियां अपने व्यापार प्रचालनों में सामाजिक एवं पर्यावरणीय समस्याओं को स्वेच्छा से समाकलित करती हैं। सामाजिक रूप में ज़िम्मेदार कम्पनी होने का अर्थ पर्यावरणीय एवं सामाजिक समस्याओं का समाधान करने के लिए ठोस उपाय करके विधि के अन्तर्गत अपेक्षित से अधिक अनुपालन करना है। कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) एक ऐसी संकल्पना है जिससे संगठन अपने प्रचालनों के सभी पहलुओं में पर्यावरण सहित सभी पणधारियों पर अपने कार्यकलापों के प्रभाव का उत्तरदायित्व लेकर समाज के हित की रक्षा करते हैं।

कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व अपने पणधारियों के हितों की पहचान करते हुए आर्थिक, सामाजिक तथा पर्यावरणीय रूप से धारणीय ढंग में प्रचालन करने के लिए कम्पनी की प्रतिबद्धता है। यह प्रतिबद्धता सांविधिक अपेक्षाओं से परे है। इसलिए कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का धारणीय विकास की प्रथा के साथ काफी नज़दीकी संबंध है। कारपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व लोकहितैषी कार्यों से भी परे है और यह सामाजिक तथा व्यापारिक लक्ष्यों से भी दूर जाता है। इन कार्यकलापों को उन कार्यकलापों के रूप में देखा जाना चाहिए जो दीर्घकाल में एक धारणीय प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त करने में सहायक हैं।

इस्पात निर्माण के पर्यावरण पर कई प्रकार के प्रभाव होते हैं। मुख्य प्रभाव ऊर्जा तथा कच्ची सामग्री के प्रयोग से पड़ते हैं जिनके परिणामस्वरूप कार्बन डायक्साइड्स (सीओ$_2$), सल्फर–आक्साईड (एसओ$_x$), नाइट्रोजन आक्साइड्स (एनओ$_x$) का उत्सर्जन होता है और हवा में धूल होती है और इनके साथ–साथ पानी के प्रयोग तथा संबंद्ध उत्सर्जन होते हैं। भारत में उद्योग क्षेत्र से होने वाले सीओ$_2$ उत्सर्जन का 15 प्रतिशत लोहा एवं इस्पात उद्योग से होता है। इस्पात संयंत्र खतरनाक अपशिष्ट सहित अपशिष्ट सामग्री की बड़ी मात्रा का सृजन करते हैं। इस्पात उद्योग उसके प्रचालन तथा अनुरक्षण के जटिल स्वरूप तथा उनके साथ संबद्ध कई खतरों के कारण कई अन्य उद्योगों की तुलना में सुरक्षा, स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक बहुत कठिन चुनौती है।

1.2 स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड (सेल) भारत की एक अग्रणी इस्पात उत्पादक कम्पनी है। इसके पांच[1] एकीकृत इस्पात संयंत्र हैं जिनकी उत्पादन क्षमता 13 मिलियन मीट्रिक टन (एमएमटी) है। वर्ष 2009–10 के दौरान इसकी समग्र बिक्री ₹43,935 करोड़ थी जिससे निवल लाभ ₹ 6,754 करोड़ था। कम्पनी की उत्पादन रूपरेखा में कच्चा लोहा, वॉयर रॉड्स, राऊंड, प्रबलीकरण सिल्लियां, एंगल, चैनल, बीम, कॉयल, पाईप, छड़ें, भारतीय रेल के लिए पटरियां और पहिए तथा एक्सिल शामिल हैं। "विज़ाग स्टील" के नाम से जानी जाने वाली राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आरआईएनएल) भारत का प्रमुख इस्पात उत्पादक है। इसका आध्र प्रदेश में विशाखापत्तनम में एक संयंत्र है जिसकी उत्पादन क्षमता 3 एमएमटी है और यह भारत का एकमात्र समुद्रतट आधारित इस्पात संयंत्र है। 2009–2010 में आरआईएनएल का टर्नओवर ₹ 10,635 करोड़ था और उसका निवल लाभ ₹ 797 करोड़ था।

लाभ कमाने वाली कम्पनियां होने के कारण सेल तथा आरआईएनएल के पास इस उत्तरदायित्व के निर्वाह हेतु पर्याप्त संसाधन हैं।

[1] झारखंड में बोकारो इस्पात संयंत्र (बीएसएल), छत्तीसगढ़ में भिलाई इस्पात संयंत्र (बीएसपी), उड़ीसा में राऊरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी), पश्चिम बंगाल में दुर्गापुर इस्पात संयंत्र (डीएसपी) एवं इसको इस्पात संयंत्र (आईएसपी)।